महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

द्वारा

वर्तमान समय की चुनौतियाँ और गोस्वामी तुलसीदास विषय पर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांकः 07-08 अगस्त 2019

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा महाकवि तुलसीदास की जयंती के उपलक्ष्य में 'वर्तमान समय की चुनौतियाँ और गोस्वामी तुलसीदास' विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में **7-8 अगस्त, 2019** को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी का संयोजन चार सत्रों में हुआ।

प्रथम सत्र दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र था। जिसकी अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। सत्र का उद्घाटन मा. कुलपति एवं अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। बीज वक्तव्य प्रो. रामजी तिवारी, पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ने दिया। इस सत्र में विशिष्ट वक्ता के तौर पर प्रो. हरमोहिंदर सिंह बेदी, कुलाधिपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला और प्रो. रामजी तिवारी मौजूद रहे। सत्र संचालन प्रो . अवधेश कुमार ने किया।

स्वागत वक्तव्य देते हुए प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि तुलसीदास क्लासिक रचनाकार तो हैं ही उससे आगे भी हैं। आखिरकार वे कौन सी परिस्थितियाँ थीं, जिसमें तुलसी लिख रहें हैं, इटली में जब मैकियावेली शासक के लक्षण गिनवा रहा था और उसमें चालाकी और धूर्तता को शामिल कर रहा था। ठीक उसी समय तुलसीदास ने बज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल राम का चरित्र रचा। तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से आदर्श निर्मित किया है। तुलसी के राम गरीब निवाजू हैं। राम-जन्म के अनेक कारण हैं। बड़ा कवि अनंत दरवाजों का संकेत करता है। तुलसीदास ऐसे ही कवि

हैं। इसलिए तुलसी इतने वर्षों से टिके हैं। यह भी देखना चाहिए कि कविता के लिए वे क्या जरूरी मानते हैं? केवल हृदय से काम नहीं चलेगा। विचार भी जरूरी है। तुलसी में भाव-विचार का मणिकांचन संयोग है। उनके काव्य में अपने युग का दुख-दर्द अभिव्यक्त हुआ है। इस संसार की व्यथा उन्हें मथती है। रावण दरिद्रता का दशानन है। कविता की ऊंची से ऊंची चीज उनके काव्य में दिखाई पड़ती है। उनकी कथा भारत के रोम रोम में बसी है। बल्कि उसे बसाने वाले तुलसीदास है। हमारे संस्कारों के निर्माण में उनकी भूमिका है। कविता की एक कसौटी यह भी है कि संदर्भ ज्ञात न होते हुए भी महत्वपूर्ण हो। तुलसीदास की चौपाइयों को जनता ऐसे ही याद रखती है। यह सिर्फ सफलता नहीं, चरितार्थता है।

प्रथम विशिष्ट वक्ता प्रो. रामजी तिवारी ने कहा कि यह देखना जरूरी है कि तुलसीदास वर्तमान युग की चुनौतियों से कैसे टकराते हैं। यानि कि आज वे हमें क्या मदद करते हैं। उन्होंने कहा कि जबतक सत्ता रहेगी तबतक उनकी प्रासंगिकता कम नहीं हो सकती। तुलसीदास के चिंतन में राम ब्रह्म हैं लेकिन कविता में जननायक हैं। उन्हें खिन्न प्रिय हैं। जहाँ कोई दुखी है उसके पास वहाँ जाना चाहते हैं। तीन कुलों का वर्णन हैं- नरकुल, वानरकुल, दानवकुल। वे इनसे निकाले गये लोगों के उद्धार के लिए जा रहें हैं। भगवान दीनबंधु है, दरिद्रनारायण हैं। तुलसी एक लोकनायक का निर्माण कर रहें हैं जो अपने चरित्र से लोक को संभाल सके। वे ऐसे समन्वय में राम को प्रस्तुत करना चाहते हैं, जहाँ सब कोई शामिल हो सके। विचार और उच्चारण की संगति के लिए उन्होंने वाणी की प्रार्थना से मानस को शुरू किया। तुलसीदास जी हमेशा एक जरूरत से काव्य की रचना करते हैं। राम कथा के माध्यम से वे जनचेतना को शिक्षित करना चाहते हैं। विसेंट स्मिथ लिखते हैं उस समय दो शासक थे अकबर और तुलसीदास। तुलसी ने जिस राम का चित्रण किया है वह युगों-युगों तक रहेगा। बाईबिल के बाद यह सर्वाधिक अनुदित और स्वीकृत है। गांधी ने लिखा कि बचपन में तुलसी के रामायण का सबसे गहरा प्रभाव पड़ा। भक्तिकाल के साहित्य में तुलसी का 'मानस' सर्वोत्तम कृति है। मानवीय धरातल पर बड़े छोटे का भाव नहीं है, सब बराबर हैं। सारे विवाद और प्रवाद इसलिए खड़े होते हैं क्योंकि हम उसे संदर्भों से काटकर देखते हैं। अगर संदर्भों के साथ देखें तो रावण से अधिक विवेकशील मंदोदरी है। तारा बालि से अधिक विवेकशील है। तुलसी का साहित्य आज भी प्रतिकार का साहित्य है । तुलसी को इस बात की भी चिंता है कि कैसे गीत गाये जाएं। इक्कीस राग में गीतावली है। तुलसी ने लोकप्रियता के लिए एक भाव की खोज की। तुलसी की कविता हित करने वाली है। वे साहित्य निर्माण के लिए दृष्टि भी देते हैं। रचना उनके लिए एक उपासना है। जितनी आदर्श शर्तें हैं वह सब उनके यहाँ एक क्रम से आती हैं। गोस्वामी जी सारे वैदुष्य के बाद जनपक्ष पर उतरते हैं। तुलसीदास

एक कवि हैं। काल और स्थान की सीमा से परे समग्र चेतना का प्रतिकारधर्मी कवि का नाम तुलसीदास है।

विशिष्ट वक्ता हरमोहिंदर सिंह बेदी ने कहा कि अगर कभी एशिया के देशों का इतिहास लिखा जाएगा तब तुलसीदास को हम भूल नहीं पायेंगे। ऋगवेद और रामायण के बाद रामचरितमानस सबसे बड़ी रचना है। विनय पत्रिका का अरबी और फारसी अनुवाद हमारे लिए आदर्श है। भारत ही नहीं पाकिस्तान तक में भी रामकथा का प्रभाव है। गुरूगोविन्द जी के द्वारा दशमअवतार और कृष्णावतार की गाथा लिखी गयी। उन्होंने इन्हें वीर रस के रूप में लिखा। लगभग 500 कविताएँ रामकथा पर गुरूमुखी मे लिखी गयीं। इनकी पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। गुरूकाव्य के बाद पंजाबियों के जीवन में राम कथा का ही स्थान है। उन्होने बताया कि गुरू ग्रंथ साहिब में 25 हजार बार राम शब्द आया है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए मा. कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि तुलसीदास मनुष्य की सांस्कृतिक चेतना को संरक्षित करने के कवि हैं। वे काव्य मर्यादाओं की स्थापना करते हैं। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से वे साधु कवि हैं। लेकिन ध्यान रखना चाहिए कि मानस काव्य ग्रंथ नहीं है। इसका उपयोग आस्था पर चोट पहुँचाने के लिए होता है। तुलसी का प्रतिपाद्य मर्यादाओं की स्थापना है। इसे पढ़ते हुए कथा संदर्भों का ध्यान रखना चाहिए। रामचरित मानस पर कविता के संदर्भ में बहस बंद कर देना चाहिए। दुनिया के हर धर्म ग्रंथ में सब अच्छी चीजें ही नहीं हैं। कुछ चीजें जरूर रहती हैं जो हमारे परिवेश में घटतीं नहीं। मानस धर्म काव्य है। उसे कविता के रूप में नहीं समझा जा सकता है। तुलसी का मानस अनुभव जन्य ज्ञान के आधार पर नहीं समझा जा सकता है। वे लोकमंगल, लोकद्वार के कवि हैं। हमें मानस को केवल साहित्य बुद्धि के साथ देखने का अधिकार नहीं है।

दूसरा सत्रः तुलसीदास का काव्य सौंदर्य एवं भाषा का स्वरूप।

भोजनोपरांत द्वितीय सत्र की शुरुआत हुई। द्वितीय सत्र का विषय था— तुलसीदास का काव्य सौंदर्य एवं भाषा का स्वरूप। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. सरजू प्रसाद मिश्र, पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी, नागपुर विश्विद्यालय, नागपुर ने की। सत्र का संचालन डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी ने किया। डॉ. मुन्ना तिवारी ने वक्तव्य देते हुए कहा कि तुलसीदास ने हर विषय पर लिखा। वे भारतीय चेतना, भारतीय चिंतन,भारतीय मूल्य के कवि हैं। लेकिन उससे पहले यह समझना होगा कि भारतीयता क्या है? भारतीय पद्धति अनुकरण नहीं अनुकीर्तन की पद्धति है। तुलसी अनुकीर्तन के ज्ञान चेतना के कवि हैं, अनुकरण के नहीं। ज्ञान और लोक के समन्वय को समझने के लिए तुलसी से बड़ा कोई कवि नही है।

डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि तुलसी का समस्त काव्य जनहित के लिए है। समन्वय की विराट चेष्ठा है। उनकी कविता केवल मनोरंजन के लिए नही है। प्रो. अवधेश कुमार ने कहा कि तुलसी में विविध शैलियाँ और भाषा के कई रूप हैं। भाषा में सारी शैलियों का प्रयोग हुआ है। दोहे चौपाई पद्धति में तो सर्वोच्च हैं ही। डॉ. विष्णुकांत शुक्ल ने कहा कि तुलसी ने संस्कृत से 80% नकल किया है। तुलसी ने संस्कृत में जो पढ़ा उसे हिंदी में उगल दिया। संस्कृत, अवधी, ब्रज और उर्दू तक का प्रयोग किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. सरजू प्रसाद मिश्र ने बताया कि तुलसी को अपने संघर्षों के चलते मानव मन की समझ है। तुलसी कृष्ण जीवन और ग्रामीण जीवन के कवि थे। तुलसी ने तमाम भाषा के शब्दों को घोल दिया है। उनमें रीतिकालीन कवियों से ज्यादा सौंदर्य है। तुलसी की भाषा में जो संगीत है वह और कहीं दुर्लभ है।

तीसरा सत्र: तुलसी काव्य में लोकमंगल का भाव

इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस शेषारत्नम जी ने की। शुरुआत में शोधार्थियों ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया। जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय के शोधार्थी श्री सुरेंन्द्र सिंह ने 'तुलसीदास के काव्य में मोहभंग-एक पुनर्विचार विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। तत्पश्चात भोपाल से आये डॉ. रामानुज रघुवंशी ने तुलसी काव्य को वर्तमान समय के स्त्री विमर्श से जोड़कर अपना विचार व्यक्त किया। उनका मानना था कि गोस्वामी जी नारी निंदक नहीं हैं अपितु उनके पदों को संदर्भों से हटाकर ही उन्हें नारी निंदक कहा गया है। कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय से आये हुए प्रो. बलजीत कुमार श्रीवास्तव के व्याख्यान से हुआ। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और तुलसी काव्य विषय पर अपना विचार रखा। भारतीय संस्कृति पर उस समय कुठाराघात किया जा रहा था जिसके कारण ही तुलसी जी ने रामराज्य की कल्पना की बात की। तुलसीदास जनचेतना पैदा करते हैं। वे एक नये समाज की कल्पना करते हैं। उन्होने रामराज्य के रूप में जो स्थापित किया वो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ही रूप है। तुलसी साहित्य में लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण सत्यम शिवम सुन्दरम का भाव निहित है। तुलसी ने अपने काव्य में सत्य, शील, धैर्य , समता आदि लोक और मानव गुणों के बारे में बात की। राष्ट्र और समाज का विकास तभी हो सकता है जब राजा और प्रजा में समन्वय की भावना हो। समन्वयवादिता जैसी तुलसी के काव्य में है वह अन्य कहीं विरल ही दिखाई देती है। इस समन्वय भाव के कारण ही आज भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अपनी महत्ता बनाए हुए है। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. रामानुज अस्थाना जी ने अपने विचार व्यक्त किए। रामकथा और कृष्णकथा का आरम्भ 6ठीं शताब्दी के बीच आलवारों द्वारा होता है। प्रेममूला भक्ति,

प्रपत्तिमूला भक्ति को आलवारों से लेकर ही 'विनय पत्रिका' मे तुलसी दिखाते हैं। तुलसी के समय समाज व संस्कृति मे बिखराव है। उसी स्थिति में तुलसी ने 'मानस' का प्रतिपादन किया। कार्यक्रम के अगले वक्ता डॉ. मनोज पाण्डेय ने वर्तमान समय की चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में तुलसी काव्य के लोकमंगल की भावना को देखने का प्रयास किया। भले ही सत्ता बदली है परंतु आज के समय की भी सामाजिक स्थितियाँ तुलसी के समय के समान हैं जो कुछ तुलसी ने देखा समझा और लिखा है वही समय आज भी विद्यमान है। जाति, भूखमरी, बेकारी, किसान समस्यां सभी को देखकर लिख रहें हैं तुलसी। तुलसी ने समग्र समाज की चिंता व्यक्त की है अपने काव्य में। तुलसी वंचित, पीड़ित, प्रताड़ित समाज को अपने साहित्य में ध्यान दिया है। बेगारी, भूखमरी की समस्या पर भी उन्होंने लिखा है जो आज भी समान ही है। तुलसी खेती करने वाले किसान की पीड़ा को भी दिखाते हैं। यह समस्या उस समय की भी है और आज की भी है। डॉ. रचना शर्मा ने कहा कि 'रामलला नहछु' द्वारा लोक को स्थापित करने का प्रयास तुलसीदास ने किया। जिसमें कहीं मछली को शुभ माना जाता है तो कहीं 'दही' का वर्णन है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आजकल की सारी चुनौतियाँ, उनके जितने भी पक्ष हो सकते हैं, सभी हमें तुलसी के 'मानस' में दिखाई देते हैं। उसी को आधार बनाकर ही तुलसी के अन्य रचनाओं के बारे में चर्चा की जा सकती है। जितने भी मानव गुण होते हैं वह सभी मानस के पात्रों मे दिखाई देते हैं। सांस्कृतिक परम्परा, सामाजिक व्यवस्था को सदृढ़ व अक्षुण्ण रखने के लिए 'त्याग' गुण 'मानस' के पात्र में दिखाई देता है। जाति व्यवस्था को भी तुलसी ने कर्म के आधार पर ही देखने की चेष्ठा की है। उन्होने छिन्न-भिन्न होती सामाजिक स्थिति व अव्यवस्थता को दूर करने के लिए ही लोक के भाषा में 'मानस' की रचना की। समाज को जनतंत्रवादी बनाने की चेष्टा तुलसी ने 'मानस' मे की है। राजनीति को वे जनतंत्रवादी परम्परा में ही रखने की बात करते हैं- "मुखिय मुख सो चाहिए खान पान को एक" सामाजिक विगड़ती व्यवस्था से कैसे निकल सकते हैं इसका मार्ग तुलसी ने दिखलाया है। सामाजिक अत्याचारों की घटना का वर्णन कर उसका समाधान पेश करते हैं। लोक संस्कृति को बचाने की बात तुलसी करते हैं। गीतावली में पालना, हिंडौली आदि पर बात करते हुए लोक संस्कृति को बचाने की चेष्ठा तुलसी ने की। कार्यक्रम के अंत में अस्थाना जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

चतुर्थ सत्र: "तुलसी की भक्ति एवं दार्शनिक चेतना का स्वरूप"

कार्यक्रम के अंतिम सत्र की अध्यक्षता मा. कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्लजी ने की। सत्र का संचालन डॉ. रूपेश कुमार सिंह जी ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में भोपाल से पधारे डॉ. यशवंत सिंह

रघुवंशी जी ने तुलसी की भक्ति और दार्शनिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। भक्ति की उत्पत्ति और तुलसी की राम की भक्ति पर बात करते हुए भक्ति को मनन-चिंतन से प्राप्त करने की बात कही। गाय के समान जुगाली करने, अर्थात चिन्तन-मनन से ही भक्ति का रसोद्रेक होता है। तुलसी 'सियराम मय सब जग जानी' के आधार पर सबके हित की बात करते हैं। गोस्वामी तुलसी भक्ति सिद्ध कवि हैं। चातक प्रेम की दशा उनमें दिखाई देती है। विनयपत्रिका में शील का गीतावली में पौरूष का चित्रण किया। राम को प्रपत्ति, शरणागति के सारे षड़विध तुलसी की भक्ति में दिखलाई देते हैं। तुलसी की भक्ति 'नगद धर्म' है। डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय ने अपना विचार व्यक्त करते हुए तुलसी की भक्ति को एकनिष्ठ भक्ति बताया। अगले वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह जी ने तुलसी के भक्ति के बारे में और उनकी 'मानस' की ख्याति के बारे में बताते हुए मारिशस में भी बसे भारतीयों की "रामचरित मानस" के प्रति श्रद्धा तथा अगाध भक्ति के बारे में बात की। अगली कड़ी में प्रो. अखिलेश कुमार दुबे जी ने भक्ति आंदोलन पर चर्चा करते हुए उसको भारतीय समाज का सबसे बड़ा आंदोलन बताया। संस्कृत और शास्त्र आम लोग नहीं पढ़ सकते लेकिन इन भक्त कवियों ने उस भक्ति को, उस ज्ञान को लोग तक पहुंचाया। संतो की भूमिका रही है आम जन को भक्ति के अमृत तक पहुँचाने की। तुलसी की भक्ति जीवन जीने का साहस देती है, शक्ति देती है। वे कर्म निरत समाज की बात करते हैं। नवधा भक्ति जानते हुए भी तुलसी लोक के हित के लिए आसान 'दास्य' भक्ति की चर्चा करते हैं। प्रो.रामजी तिवारी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तुलसी अद्वैत तथा विशिष्टाद्वैत के मध्य मार्ग बना रहे थे। तुलसी के अनुसार भक्ति वो है जो भक्त को भी सुख दे। भक्ति का एक अर्थ जुड़ा हुआ होता है जिससे ईश्वर के साथ जुड़ने की बात होती है। तुलसी ने नवधा भक्ति के स्थान पर आध्यात्म रामायण की भक्ति को अपनाया। तुलसी के भक्ति दर्शन में मूलतः 'सदाचार मूलक' भक्ति की बात है। तुलसी अपनी भक्ति में कृपा के साथ प्रीति की बात करते हैं। प्रीति में विरह का बहुत बड़ा स्थान है क्योंकि विरह में दृढ़ता होती है। इसके लिए ही तुलसी भरत की प्रीति की बात करते हैं। ज्ञान, कर्म, भक्ति इन तीनों तत्वों में तुलसी ज्ञान व कर्म को मानतें हैं पर इनकों साधन मानते हैं परंतु भक्ति को साधन और साध्य दोनों ही। मानस के उत्तर कांड में दो प्रतीक है- ज्ञानदीप, भक्ति मणि। ज्ञान एक सुदीर्घ परम्परा का परिणाम है परंतु वह जल्दी बुझ जाएगा जबकि भक्ति मणि स्वंय प्रकाशित है। भक्ति नित्य निखरने वाला तत्व है जिसका आधार लोकसंस्कृति है, यह नितांत व्यवहारिक है, अपने सुगमता के कारण यह विश्व स्तर पर स्थित है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल जी ने दर्शन और भक्ति पर विचार करते हुए भक्ति के दार्शनिक स्वरूप को बताया। तुलसी स्वान्तः सुखाय की बात करते हुए ऐसी बुद्धि की बात करते हैं जो मंजुलता को प्राप्त हो। तुलसी लोक और शास्त्र को बांधते हुए दोनो को जोड़ते हैं। ईश्वर को यदि आम जन से जुड़ना है तो बड़े पुराणों से काम नही चलेगा,

उसे लोक के करीब सगुण भक्ति के रूप में ही आना पड़ेगा। यद्यपि दर्शन अपनी पूर्णता में मौन करता है। जबकि भक्ति मन से 'मानस' का विस्तार करती है। स्वांतःसुखाय आत्मचेतन का बोध है। जो सबके सुख का कारण है। तुलसी में करूणा और प्रतिरोध दोनो हैं। तुलसी दास्य भाव के कवि नहीं है। जो तुलसी गौरवबोध के नायक की रचना कर रहा है वह दास्पबोध से कैसे करेगा। तुलसी में अपनी चेतना को अपना स्वामी स्वीकार करने का बोध है। वे भारतीय परंपराओं के समन्वय के कवि है। वे एकात्मक भारत के कवि हैं। तुलसी के राम पूरी परंपरा में विशिष्ट पहचान रखते हैं।

ज्ञान शांति मैत्री